

एनकमगुरु प्रायादिका वस्यतया ॥ आदिया कुरुस वक्रुकिनतन मि
थमनुशयि ॥ विमबहुठिया व यक्रुकि काय धर्थ जिमनिनाइया ॥
॥ यनगुरु इयाय ॥ मधमयि कुरु ॥ ॐ ॥ वृ ॥ १ ॥ धसवक्रुस सुयम
धम इन धवम धम यिन ॥ ० ॥ वृ ॥ १ ॥ धनक्रया इधधवम धम यि
ध सुयम धम ॥ ॐ ॥ वृ ॥ १ ॥ धवम धम यि काया व सुसविजन याय
नागि सुस्य सुहा धन काय ॥ यथमकमस भयादिमूर्त ॥ गुनादि धने
मवादिमूर्त ॥ २ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ४ ॥ धनमवादि धया ॥ गुनादि धय ॥ ६ ॥ १ ॥ ८ ॥
× द्विती यकमस भयादि धन ॥ १ ॥ द्विती यकमस गुनादि सुहा विवनि ॥ ×

॥ १० ॥ ११ ॥ धनगुनादि ॥ ॥ उकि काय इका ॥ ३ ॥ ३ ॥ ४ ॥ १ ॥ १ ॥ ८ ॥ नागि
धनता कर्कटदि राखकाय धनत ॥ १२ ॥ १० ॥ ११ ॥ ० ॥ १ ॥ २ ॥ धनसक
नादि धय ॥ सुहा ॥ मधुसुधनय वाय इका नागि त्रवतिन ॥ ॐ ॥ सुमदन
अदि कादका ॥ १२ धन धन ॥ नागि गुहायाय धनका व दकान स्व सुसखा
सुहाया सुहाया धनया धनदा काया व अनुकान गुहायाय ददिस विव
नाई ॥ वीकनाय वि धताव राग १०० धन ॥ उकि काया राग १०० धन ॥

गुरुका या तिका ॥ थव थव जना थव थव मन्दा बालीन थाय ॥ शिव स्वयाव पुनि
 रुनसा खलु कायमदा ॥ अर्जुन साद्रा १० रुनसा कि १ खलु न ॥ निय २० अर्जुन रुनसा न ॥
 खलु न ॥ अथ नि नागि गुल ३ धन याय ॥ दकोन खलु सीधा ॥ १० धन नर्थ ना या सेवा
 हीन ॥ घटिस विकना ॥ अर्जुन कान गुल या ठा व का धस वरि १० धन ॥ घटिस मून ॥ घ
 टिस ॥ पूयन १० राग काया व ॥ अर्जुन वमून ॥ घटिया ॥ शिव न नर्क १० विकना या स वममान
 अर्जुन राग १० धन ॥ लव खलु रु लव मून ॥ १० धन राग का स वर गुल १० धन ॥ झावी
 धन कतया ॥ शिव न ना न्य ॥ अथ नि राग १० धन ॥ लव विकला रुना ॥ खलु रु लस १० ध
 न नर्थ न ॥ अर्जुन रुना ॥ दानसा ॥ अर्जुन ३० धन धन ॥ नागि रुना ॥ झावी ॥ वी ॥ शिव या थव थव स
 मल ॥ धन ॥ मीया व थाय ॥ ता व रुन ॥ रुकि काय ॥ अर्जुन व रु ल स वि ॥ शिव धन ॥ धन स
 स रु कि ॥ विना या व काय ॥ व रु रु क या रुका ॥ ३ धन स काय रुना ॥ विध रु कि वि का

५ सूच रु कि ३ धन रु

या व काय ॥ घटि ॥ विध मिस ॥ अर्जुन कान गुल याय ॥ विकना ॥ पूयन १० धन ॥ शिव व स ॥
 घटिस ॥ राग १० धन ॥ लव न रुकि ॥ धन ॥ रुनसा न न्य ॥ अर्जुन रुनसा थाय ॥ थाया स व अ
 र्जुन ॥ सर्वदा ३ धन थाय रुना ॥ पून थाया स व यिका या व काय ॥ अर्जुन कान गुल ॥ दिनीय कमया
 ॥ ख न न था न सा ॥ रुन ॥ ख न स था न सा ॥ रु वि न
 १० रु क या म धम स ॥ अर्जुन १० धन थाय रुना ॥ रु क या दि नीय रु न स ॥ अ
 र्जुन ३ य कि म ड द य या ॥ व क या य कि मा रु या ॥ धन धन थाय रुना ॥ दि नीय रु
 रु स ॥ अर्जुन १० पू व द य या ॥ व स ॥ पू व रु या ॥ धन धन थाय रुना ॥ धन धन
 जि यि व ॥

५ गिरी ५
 १० धन रुनसा न ॥
 १० धन रुनसा न ॥
 १० धन रुनसा न ॥
 १० धन रुनसा न ॥

[illegible]

लसि वही १० थन ॥ र्थताया लवृ द्यटि सर्वे विकारु ॥ धनन दिनमानया ॥
 १४ दावेन ॥ स्वसमनसं कृ अग्निन वीको र्विया आखन गनिया ठन
 ६ दावेनया तिथिया चारव वानया चारव धनै स्वताया चारव मूढाव
 राग १२ धन ॥ ८ वन को चारव स्वयाव गुं न्यादि ० मी नन ॥ आ ॥ अ ॥
 न ॥ ना धव क्रस ६ थशन वाठाना नि थशन थायन भावन मउ सय ॥
 रुल ॥ आदित्यया मिसृ कन रुल ॥ अंगनया रुनि व वायुव ॥ गनि श्व
 लया ॥ गंगरु रुन ॥ नाहया धान रुल ॥ वी वृ वृ गु धय क्रस रुल ॥
 थायन भावन ना वय ॥ ६ थकन वाठाना नि थकन ॥ चंदया मंगन रुन ॥

वृषया धननारु रुतु ॥ वरुस्यति यामिनुवरु ॥ शुक्र या हि ठगतिनारु ॥
कायाकन सांस्त्य शना ॥

१ आदित्यलग्नसारुल ॥ काधि कृतस रूतस सलावधलव कुकश गनीव ॥ १ ॥
इती यलग्नस आदितर्व काल वरुण्यदनसगि कृषनसर्वन तायुशनी ॥ २ ॥
पृणीयलग्नस आदितर्व काल महायवूवागशय वलननकशय थवनका कृष्ण
टाठशय मामनवायन विस्यंती था धनकृष्ण भाचकिव ॥ ३ ॥ वरुथलग्नन
स आदितर्व काल विनया धरवमदाय यदसदुजायय यि व मिसवा वैखी
शय ॥ ७ ॥ धनमलग्नस आदितर्व काल गुरवीशय वयलखनराय खसिव ॥ ८ ॥
रवमलग्नसर्व काल महावयलशय नाटवटवधाय अग्नि यव नक्षत्र
नसि सिलेव पुत्रिशय विद्यानिशय थकू लया यतिक लाशय उठनायक

शय ॥ ६ ॥ सयमलग्नसर्व काल थमया खकाज मिस्य वैखनयिय गनीलतुन
यालाशय अय कालिशय काधिशय गीव वैखिशय नागीशय ॥ १० ॥ अरुम
सर्व काल नागन कवू मिम्वतमहिं ग्व इधरिवशय धनहिनशय विठुव
मशय ॥ ८ ॥ नवम लग्नसर्व काल धनरागी मिशरागी देव गुरुसक रूगति
शय यिवरु गतिशय ॥ ९ ॥ दशम लग्नसर्व काल मतिपूवशय गूनशय ध
नवतशय गनीललीनिव रुठ धनिव हिं ग्व यूरलारुदाय कार्यसिधय
क्रूरय ॥ १० ॥ एकादश लग्नसर्व काल संचयशय नियूनशय वनवनकशय मि
सव वैखि अरु कालिशय मा मिसा थालेव विषयस कामिशय कार्यसि
धयकं रुय ॥ ११ ॥ द्वादश लग्नसर्व काल गनीममहि निव अनालीशय वा

三

८५५

ययौ मिश्रव, ध्वषिश्य, नानाहीन ध्यालिदौ, मिषानलश्य ॥ १२ ॥ द्वितीय
 दिन लग्नसर्वव्यापक ॥ १३ ॥ चतुर्लग्नसर्वकाल, मिसर्क, दया ध्यानिन,
 धनवर्गश्य, गुणवर्ग ध्यानिश्य, भवसर्वव्यथकृत, वृषसर्वव्यथधनक
 कर्कटसर्वव्यथधन, धनलग्नयादु, रु लग्नो, धनसर्वलग्नसर्वकार्य, इति
 श्य, दालीदश्य, हं गडलूमधाय, खासश्य, लग्नयादु ॥ १४ ॥ द्वितीयलग्न
 सर्वकाल, सुखीश्य, मिश्र, युग, धन, संयक्ति, दय, प्राकसर्क, ध्यानिश्य ॥ १५ ॥
 तृतीयलग्नसर्वव्यथकाल, कृयनिश्य, संचयश्य, किंजादाय, कीजावनि
 पालयाय ॥ १६ ॥ चतुर्थलग्नसर्वव्यथकाल, गतिधूलव, ध्यानिश्य, स्ववला

गी. धेनवकश्यू ॥८॥ यं च मसवकालं, गूलविद्यावन, नीलवनकश्यू, का
यभावाधालित, मिश्ररागी, धेनरागीश्यू ॥९॥ वष्टमलनसं, चन्द्रवकाशं, ली
कयायीतिरु, नविलरिर्नव, आयलयं, चालाया अनिष्टदाय, धानरिर्नवश्री ॥
॥१०॥ नयमलनसर्वकालं, धेयिसरावधालं, गरीनरिर्नव, कामीश्यू व
लुक्यकया रिष, कृष्णयकया, सरिं, व्याधिनकयूत ॥ धर्तवि, नव ॥ ॥
अष्टमलनसं, चन्द्रवंकालं, लीगयाधिन, यितलधिव, अनिष्टवृंदय, आ
युक्तनामदा, उच्चमिष्ट, स्वकल, शकालं, अनिष्टमदाश्री ॥११॥ नवमल
नसर्वकालं, दवरुगति, यिष्टरुगतिरु, शुक्ति, यूनमिष्ट, संयुक्त, शू, शू, यून

वाकं साहायवकशय कामिशय ॥ १० ॥ दशमलग्नसर्वकालं कार्यमनिल
 कशय धनवकशय गूलशय ॥ १० ॥ नि का दश लग्नसर्वकालं धनवक
 शय यशरागीशय भा मिसाधलव लो कवक ॥ ११ ॥ द्वादशलग्नसर्वकालं मिशवी
 शय सहावयक किं किं नव ॥ ११ ॥ द्वादशलग्नसर्वकालं मिशवी
 शय ॥ ११ ॥ नीलमहिनु प्रागीशय अनानिशय मी ग्वठमहिनु ॥ १२ ॥ नि
 चलग्नसर्वकालं वयया रु ल ॥ १२ ॥ जंगल लग्नसर्वकालं वयया रु ल ॥ कनक यिव
 साहासवक नयधिशय निकार्जियाठजीय अनिल हि नू चयनशय ॥ १३ ॥
 इतिय लग्नसर्वकालं वामहिनु धन खटि याय अर्थववर्वकाय ॥ १४ ॥

कृषीय लग्नसर्वकालं नूमहिनु धनशय किं जा कं रु यनिमरुलथिव बा
 ययार्क रु गतिशय धनवकशयानि वि का निशय शुखिशय ॥ १५ ॥ चतुर्थल
 ग्नसर्वकालं ननक विरुठयिय विटिक खलाय थं य इखिशय चकयय न
 नकमकव यद नजी यय ॥ १६ ॥ यचमलग्नसर्वकालं नीलमहिनु प्राय
 नकय लो कवयी निमदाय चयलखलावध लव भा चायि ठं याय भा चा
 मकय ती च आत्माशय ॥ १७ ॥ षष्ठमलग्नसर्वकालं वाकं रु वव नकाय नया सा
 निव अग्नि वा लयिव अनिलहिनु अ गमथालिव गयु जितनाथव उ व
 मिश्र शु क रु शकालं ॥ १८ ॥ सप्तमलग्नसर्वकालं रु कं रु लानं न को म म

वं ग्वं कनातमरुनयिव प्रागीशय इरिविशय कनातयादुद नाना इश्व
 रुय ॥ १ ॥ अरुमलनसर्वकालं व्याधिनयितुलियय खवमिग्वरुस यितुत
 यिय अल्य आयुः गनीलमरुन निव नतिरुय ॥ ८ ॥ नवमलनसं अंगन
 वं कालं विरुगखीययय अं के मति धर्मस नतिमरुय गनीनमरुन ॥ २ ॥
 दगमसर्वकालं कर्मरुन नूनरुय धीर्यवनरुय यवन पुनरुय अरुिवरु
 य भावानस्यनरुय भवनरुन निव ॥ १० ॥ अकादगलनसर्वकालं यनवंरु
 रु भवयका नखीययय साधनाय यन धीर्यनरुय वाथेखिव ॥ ११ ॥
 दादगलनस अंगलवंकालं रु ग्वरुमिग्वरुमरुन कुरु लोसन यितुल
 यिव इरिविशय निसाथरुय गनीनहीनरुय ॥ १२ ॥ ॐ ति अंगललनसवग्व

यारुल ॥ १३ ॥ वधलनसर्वग्वयारुल ॥ नूयवंरुय वृद्धिवनरुय ग्यानिरुय
 गनकि सिय वरुन गीरुय दीघयिरुय ॥ १ ॥ द्वितीयलनसर्वकालं वृद्धिवधन
 अरुनयिव अन्यानलगाशय भवयका नखीययय ॥ २ ॥ तृतीयलनस
 र्वकालं आयरुहाय वनवानजाय अनासमथानिव ग्यानिरुय भवयकन
 रवहाय नियनरुय सग वयनरुय ॥ ३ ॥ चतुर्थलनसर्वकालं यदित ग्या
 निरुय सारुगिरुय साभसन नक कय उत्थनवृद्धिसिव ॥ ७ ॥ पंचमलनस
 र्वकालं मरुनरुय गनीनरुन यरुलगाशय यवनं पुनरुय रु
 रथानिव ॥ ८ ॥ षष्ठमलनसर्वकालं वाद विवाद धुनिव ग्वरुधोया मथालिव

ध्यानविठलविव अलासिशय विठव लषीकाययय ॥ ७ ॥ सकुमलग्नसर्वकाल
 यक्षावतशय निकार्जिशय लोकवाताय रिग्वशीनाय सुखिशय ॥ ८ ॥ अकुम
 लग्नसर्वकाल विद्यानयचन्द्रशय मनीनहिन् धननयाक काथनायक उठना
 यक कार्जिशय ॥ ९ ॥ न मलग्नसर्वकाल अतिवृत्तायचन्द्रशय धन
 लगीशय लोकयाक दयादानुलालव नियूनशय धर्मवन्कशय ॥ १० ॥ दण
 मलग्नसर्वकाल यवधुमतिशय नियूनशय धर्मसन्तिशय सर्वदशय धिर्य
 सतिशय साधनाय नानाविधिविस्थाव शुखिशय ॥ ११ ॥ अकादग्नलग्न
 सर्वकाल धनध्वनिशय यक्षावन्कशय भामिसाधनिलिन् शुखिशय

अकस्मातन शुखिशय ॥ १२ ॥ द्वादग्नलग्नसर्वकाल धननीलासिशय कुंड
 वचनहाययय वादिशय नसतशय ॥ १३ ॥ अतिवृत्तलग्नसर्वकाल यारुल
 ॥ १४ ॥ वृहस्पतिलग्नयारुलहाय शुसलिलशय सनिनुहिन् दीर्घायुशय
 यक्षावन्कशय धर्मिकशय विद्यावन्कशय देवधर्मसन्तिशय यून्यव
 न्कशय ॥ १५ ॥ द्वितीयलग्नसर्वकाल धनवन्कशय रागीशय मनीरिन्
 धनरिनीव त्यागीशय ॥ १६ ॥ तृतीयलग्नसर्वकाल मलयचन्द्रं वृद्धि
 रिग्वर्किजा धनकाथाविव अ यारुलमसालिव रिग्वकनालथाल
 ॥ १७ ॥ चतुर्थलग्नसर्वकाल लोकसकनसव यतिशय धनलोक
 यया

सदा सन रुयीतिशयः धनवन्कशयः गतु जि नयिव साहान वाहानन
नककय थकनयाक नरुनदाय ॥ ७ ॥ यचमलसर्वकाल सुखिवशय
मावा रिग्व थालव प्रहावनकशयः मिष्ट शुद्ध निथालव धनवन्क
सुखिवशय ॥ ८ ॥ वष्टमलग्नसर्वकाल ॥ ७४ ॥ वटमरुयव अग्निमथालव
कार्ययायइकाकाव रुति निवसरुव थालव गीजिनयिव यवनयुन
वशय धनरागीशय ॥ ९ ॥ गफमलग्नसर्वकाल सौरागीशय
गनीनरिन् रिग्वकलन थालव यूनवागशय गुनवतशय धनवन्क
शय धर्मिकशय विद्यानयूनवशय ॥ १० ॥ अष्टमलग्नसर्वकाल दीर्घाय

आयुवद्विशयः भूमिसा थालव लोकवशीतिमरुव अनजनयमकाव
सुखिवकाशय ॥ ११ ॥ नवमलग्नसर्वकाल धर्मकार्यसनतिशयः विद्यावनक
शय सुखिवशय नाडा थकनयाक यवनशय ॥ १२ ॥ दशमसर्वकाल ना
गनयाकाज सिद्धकशयः कर्मरिन् सत्यवाकशयः मिसक खवयार्थ
चिन्ननयिव गतु थालव सुखिवशय ॥ १३ ॥ एकादशललग्नसर्वकाल नानावि
रुदाय यगुननककय सुखिवशय दागालशय यवनदशयनरवशय ॥ १४ ॥
द्वादशललग्नसर्वकाल अलानाशय धर्षीवकाययय गानवद्विमदाय इखि
शय ॥ १५ ॥ त्रिदशलग्नसर्वकाल ॥ १६ ॥ गुरुकलग्नसर्वकाल
मिग्वरिन् नूयवनकशय गविलरिनिव दिद्यायशय यीविषयस गतिशय

रिग्विनाय, सुविशय, विद्यावन्कश्य ॥ १ ॥ द्वितीयलनसर्वकाल, धनवन्कश्य
सुविशय, लागीशय, ग्यानिशय, नित्काजिशय, यथानयनखरय ॥ २ ॥ तृतीयल
नसर्वकाल, इ. रिशय, वंरुमथालिव, गीवा, धविशय, नि. लागीशय, ज
सवन्कमश्य, कर्महिनश्य ॥ ३ ॥ चतुर्थलनसर्वकाल, वं. कर्तुवसकल
थालिव, चतुस्यद, सारानथालिव, विद्यावन्कश्य, सीलागिशय ॥ ४ ॥ पंचमल
नसर्वकाल, रिग्वकायभावाथालिव, विद्यावन्कश्य, थकुलयाक, सवाना
थालिव, उठनायकश्य ॥ ५ ॥ षष्ठमलनसर्वकाल, गुरुजिह्वनयिव, ध
नीलरिन्, धनवन्कश्य, धीयवन्कश्य, कसावन्कश्य ॥ ६ ॥ सप्तमलनसर्व
काल, रिग्वगीथालिव, धर्मिकश्य, गीयार, द. न. वन्कथालिव, सुन

वंगश्य, नित्कार्यश्य ॥ ७ ॥ अष्टमलनसर्वकाल, दीघारिश्य, आयुवृद्धिश्य, ग्या
निश्य, वगथालिव, थकुलनयाकसवारुतथालिव ॥ ८ ॥ नवमलनसंशुक्लवकाल
धर्मवन्कश्य, यूयवन्कश्य, लाकसकधीतिश्य, खणीवृधनवन्कश्य, गवगव
कार्जसिद्धकलायिव, चतुस्यदसारुन, वाहननलककयव, अकंस्मरितवित्तथ
भव ॥ ९ ॥ दशमलनसर्वकाल, यनखागश्य, धनसाधनयलायव, मिसकडयका
नीशयीव, पुचयुनखरवृद्धिधलिव, कमरिन् ॥ १० ॥ एकादशलनसर्वकाल, ल
यवन्कग्यानिश्य, वंरुथालिव, मामिसाथालिव, गुरुगमिगुथालिव ॥ नयवन्क
श, विद्यावन्कजसरागीश्य ॥ ११ ॥ द्वादशलनसर्वकाल, अलागीसलतश्य, स
नीनगवधन, गुरिशय, रिग्वययार्थथालिव, नीरिग्वधलिव, उपकानीश्य

शयुः ॥ १० ॥ शयुः ॥ अमनायक शयुः ॥ सखिधनवंत शयुः ॥ १० ॥ गकायलम
 सतकालं वतधनीव वतविमतस्य गकाय सातनायुः लागीमशयुः आकाशिव ॥
 न ॥ ११ ॥ शयुः ॥ ॥ दायगलमसर्वकालं विकनवत शयुः मुखशयुः
 गयविशयुः चित्तयाविकलशयुः निराजशयुः वामकायशयुः दाविशयुः ॥ १२
 गह्याकनयमान ॥ १३ ॥ शयुः ॥ मिश्रकगुशकालं साकगवशकालं अकमस ॥
 दायशस ॥ १४ ॥ जन्मस ॥ १५ ॥ शयुः ॥ शिखरुवियुः शयुः ॥ लग्नयारुलस ॥ माय ॥
 ॥ १६ ॥ ॥ १ ॥ कर्मयुयासायशयुः ॥ ॥ लग्नं नकस लग्नयाकन दणमसर्वं
 गह्यारुलसायशयुः ॥ ॥ दणमसगह्यं सर्वं मदाकालं ॥ दणमसर्वं दना

निया अविधितिन र्वन नवमनालं धनयनसायशयुः लग्नयाकनना द
 नमसर्वं लग्नविधितिस नवमसदाकालं वदुयाकन दणमसर्वं गह्या
 सायशयुः दणमसगह्यं मदाकालं दणमसर्वं नानिया अविधितिन र्वन न
 वमसलालं धनयनसायशयुः ॥ लग्नयाकन दणमस आदिनर्वकालं
 वाययाविकलं शयुः शयुः ॥ १७ ॥ लग्नयाकन दणमस सर्वद्वकालं मा
 मया विकलं शयुः ॥ ॥ जगन दणमसर्वकालं धनयनसायशयुः
 शयुः ॥ ॥ दणमसर्वकालं वनजन शयुः ॥ ॥ वृहस्यति दण
 मसर्वकालं नित्यायसादन सखिशयुः ॥ ॥ लुकेदणमसर्वकालं सा
 याविकलं शयुः ॥ ॥ नानिधन दणमसर्वकालं साधनस रुसि

[illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

(॥) सुखं नानन्द ॥

五

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०० ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १०० ॥

१८जीनस्य सृल वा न सृल ॥

[illegible]

डक १२८ १२० १३० १२० १२० १२० १२८
 भन वक समा क ८७०० रुवि २०
 मक कि हि

रक्कादि संक्षयमायाः सुतरं वि

[illegible]

॥ प्रह्लाद उवाच ॥

कर्म शुद्धकस्य धनवान् खलु ॥

[illegible]

ॐ कल्याणमृतचानखड् ॥

[illegible]

॥ ०२ ॥ १४ ॥ १५ ॥

गीर्णम् ॥ द्दग्धं १७ लोम ३० ॥
६० बहुधा कर्मसंघे ॥ बुद्धि कर्म
मे लागे २९ ॥ यद्बुद्ध मकर्म निष्कर्ष

कर्म पूर्य ०१००० विना वास्तु ८२९३

12	12	10	2	2	1	2	2
21	12	28	2	3	2	3	2
22	21	11	6	3	1	2	2
30	6	28	2	1	2	2	2
11	36	10	1	1	2	2	2
66	11	21	1	1	2	2	2
106	20	20	11	0	2	2	2

॥ ज्ञानिनाम् नमः ॥

2	2	02	0	20	0	20	0	20	2	20	2	20
12	2	03	0	30	0	30	0	30	1	10	1	10
22	10	00	1	00	1	00	1	00	2	20	2	20
32	18	20	3	20	3	20	3	20	2	20	2	20
37	17	26	2	20	2	20	2	20	2	20	2	20
28	2	22	2	20	2	20	2	20	2	20	2	20
02	18	16	1	10	1	10	1	10	1	10	1	10

कर्म स्वर्ग ॥ भाष्य ॥
लाग स्वर्ग ॥
दुक मरु दुर्ग ॥
कर्म स्वर्ग ॥
गर्भ दुर्ग ॥
मि ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥

क. ॥ ०. ॥
क. ॥ ०. ॥

[illegible]

उक्त भवन प्रकाश १० रु ०० मन्दा चर्चा ११ रु २२ उक्त भवन वस ११ रु ०० उक्त भवन प्रकाश ११ रु २२ ००

शुभश्रीधनचानेव ॐ

१३	१६	१२०	९	१३	१७	१५	१४
२३	१८	१०२	९	१४	१०२	१०	१३
३१	११	६८	९	१५	६८	१०	१४
४०	१२	६८	९	१६	६८	१०	१५
५२	१२	२०	२	१७	२०	१०	१६
१०२	२०	३१	१	१८	३१	१०	१७
१२०	११	११	०	१९	११	१०	१८

१६५

[illegible]

ऐगुरुकृतानथविदि॥सर्वमश्रम
वाक्सनथास्य॥अस्थानेपुनर्म
मद्वानेसाक्षात्तः
कर्मनथायकृताः॥

कलुः नं यो यः आयासि रवस ॥ मन्त्रा
अमयिभाव् वृत्ताय द्वा तसार्थं द्वावः
स गुणार्जुनार्थं तावद् द्वाव